मैथिली लोकगाथा

विधाक आधार पर लोक साहित्यक विभाजन लोकगीत, लोकगाथा, लोकनाट्य, लोककथा आदिमे कयल जा सकैछ । लोकगाथा लोक साहित्यक महत्त्वपूर्ण विधा थिक । लोक शब्दक अर्थ होइछ देखब आ गाथा शब्दक अर्थ होइछ पद्यबद्ध उपाख्यान । लोकक दोसर अर्थ होइत अछि जनसामान्य । भारतीय वाङ्मयमे ई दुनू शब्द अति प्राचीन अछि आ संयुक्त रूपेँ प्रयुक्त भऽ लोकगाथाक रूपमे व्यवहृत होइछ ।

भारतीय विद्वान् 'वैलेड' क पर्यायक रूपमे लोकगाथा शब्दकेँ स्वीकृत कयलनि अछि । लोकगाथामे 'वैलेड' जकाँ गेयधर्मिता ओ कथानक दुनू तत्त्व विद्यमान रहैत अछि । मैथिलीमे गाथाक अर्थ लगाओल गेल अछि–ओहेन कथा वा खिस्सा जे रागात्मक ढंगसँ बिना क्रम भंगक सुनाओल जाय ।

गाथाक सामान्य अर्थ होइछ दीर्घ आख्यान पर आधारित गेयात्मक कथा । काव्य शास्त्रीय दृष्टिएँ ई कथा-काव्य थिक । ई अत्यन्त स्वच्छन्द साहित्य रूप अछि । ई स्वर, छंद आदिक नियम सम्मत प्रतिबंध किंवा वर्जनाक प्रति उच्छृंखल रहैत अछि । एहि गाथा सभक उद्‌भव लोक समाजमे होइछ । तेँ ई लोकगाथा कहल जाइछ । लोकगाथाक स्वरूप स्थिर नहि रहैत अछि । गायकक वैयक्तिक प्रभावसँ ई परिवर्तित, परिवर्द्धित आ संवर्द्धित होइत रहैत अछि । तेँ एकरा व्यक्ति विशेषक साहित्य नहि कहल जा सकैछ, अपितु ई सम्पूर्ण समाजक धरोहरि होइत अछि । क्षेत्र विशेषक प्रथा, परम्परा, व्यवहार, संस्कार आदिक प्रभावेँ एकरामे विभिन्नता भेटि सकैत अछि, मुदा एहिमे मौलिक एकता रहैत छैक ।

डॉ॰ रामदेव झाक कहब छनि कि शिष्ट साहित्यमे जे स्थान महाकाव्यक

छैक सएह स्थान ओ महत्त्व लोक साहित्यमे लोकगाथाक छैक । वास्तवमे लोकगाथाकेँ लोक साहित्यक महाकाव्य कहल जा सकैछ । महाकाव्यक नायक इतिहास प्रसिद्ध होइत छथि आ लोकगाथाक नायक लोक प्रसिद्ध । महाकाव्यक नायक उच्च कुल सम्भूत होइत छथि तँ लोकगाथाक नायक सामान्य जनसमुदायमे उत्पन्न भेल रहैत छथि ।

कोनो सामान्य व्यक्ति अपन शौर्य, पराक्रम त्याग, बलिदान अथवा अन्य विशिष्ट कार्यक सम्पादन कऽ गाथाक नायक बनि जाइत अछि ।

मैथिली लोकगाथा भारतीय लोक साहित्यक अमूल्य निधि थिक । एहि लोकगाथाक परम्परा अति प्राचीन तथा अति समृद्ध अछि । एहिमे मिथिलाक विभिन्न युगक ऐतिहासिक इतिवृत्त एवं सामान्य जनक चारित्रिक उत्कर्ष प्रकट होइत अछि ।

लोकगाथा जन समाजक रचना थिक आ एहिमे द्विजेतर जातिक सामाजिक, सांस्कृतिक वस्तुस्थितिक यथार्थ परिचय भेटैत अछि । एहि समाजमे विभिन्न लोकगाथा प्रचलित अछि तथा ओहि मध्य ओहि जातिक पुरुष नायक वर्णित भेलाह अछि ।

मैथिली लोक साहित्यक प्रचलित लोकगाथामे उल्लेखनीय अछि- लोरिक, सलहेस, दीनाभद्री, नैका-बनिजारा, अनंग-कुसमा, सती विहुला, दुलरा-दयाल, राय-रणपाल, गरभू बाबा, कमला-कोयला, गरीबन भुइयाँ, लवहरि-कुशहरि, कुमर-बृजभान, सुटकी-कुम्मरि, गुगली छत्री, शीतवसंत, अमर सिंह, कारीख पजिआर, वंशीधर बाभन, जय सिंह, मोतीदाई आदि । ओहिमे सँ किछु प्रचलित लोकगाथा एहि प्रकारक अछि:

लोरिक : मैथिली लोक साहित्यक बहुप्रचलित लोकगाथामे लोरिक गाथा उल्लेखनीय अछि । प्राचीन कालहिसँ एहि गाथाकेँ सस्वर गाबि कऽ प्रस्तुत कयल

जाइत रहल अछि । लोरिक यादव जातिक छलाह । ओ पराक्रमी आ योद्धा रहथि । ओ अपन शौर्य आ वीरतासँ समस्त समाजक उपकार करथि । तेँ हिनक गाथा नहि मात्र यादव जातिमे, अपितु समस्त समाजमे लोकप्रिय भेल । एहि लोकगाथाक विस्तार बुन्देलखण्डसँ नेपाल धरि देखल जा सकैछ । वीर, करुणा आ शृंगार रससँ ओतप्रोत अछि ई गाथा । लोरिकक चारित्रिक विशेषता अछि जे ओ वीर पुरुष छथि आ अन्यायीकेँ सजा देबामे सक्षम छथि । तेँ हिनका समाज लोकपुरुषक रूपमे देखैत छनि । लोरिक गाथाकेँ लोरिकाइन, मनरय कहल जाइत अछि । लोरिकाइन गओनिहारक संख्या दिनानुदिन घटिते जा रहल अछि । समस्त गाथा गाबयवलाक संख्या तँ अत्यन्त थोड़ अछि । संगहि श्रोताक संख्या सेहो कम भेल जा रहल अछि । एकर कारण अछि जे दीर्घ आख्यान होयबाक कारणेँ समस्त लोरिकाइन सुनबामे कतेको राति लागि जाइछ ।

लोरिकाइन मौखिक रहबाक कारणे पाठ भेद देखबामे अबैछ, मुदा मूल गायनमे समरूपता सेहो देखबामे अबैत अछि । प्रायः सभ गओनिहार सुमिरनसँ प्रारम्भ करैत छथि । गाम वा टोलमे जतेक सय-सैकड़ा व्यक्ति बैसि सकय ओहिठाम एक कातमे लोरिकाइन गओनिहार बैसि कऽ गाथा प्रारम्भ करैत छथि । श्रोतागण भावविभोर भऽ सुनैत छथि । लोरिकाइनक किछु पाँती निम्न प्रकारक अछि:

छाती तोहर देखियौ भैया

बज्जर रे केबाड़ ।

पीठ तोहर लागौ भैया,

धौलागिरी पहाड़ ।

मोछ तोहर अँइठल भैया ।

बहिंगा सन-सन ठाढ़ ।
तोरा दिशि जे ताकइ छी तऽ
लगइ छै अन्हार ।।

लोरिक गाथामे राजा हरबाक प्राण हरणक क्षणक वर्णन देखल जा सकैछ:

निशिरातिमे राजा हरबा
उठलै रे चेहाय ।
मार-मार के मारू डंका,
देलकै जे बजबाय ।।
एरही बाजा बजै जे,
तुरही घमसान ।
भोर होयत जे करतै ककरा,
नगरीकेँ समशान ।।
हिन-हिन हिन-हिन घोड़ा हिनकै,
हाथी करय चिंघाड़ ।
अकुना मकुना के बतिआबै,
सोलह सय दन्तार ।।

लोरिक तत्कालीन अन्यायी, अत्याचारी, दुराचारी, व्यभिचारी राजा किंवा सामंत योद्धा सभकेँ अपन पराक्रमसँ परास्त कऽ शौर्य एवं वीरताक लेल समस्त समाजमे प्रशस्ति पओलनि ।

आइयो ओ वीरत्व, शौर्य, उल्लासक प्रतीक रूपमे समाजमे जानल जाइत छथि । हुनक प्रतिष्ठा ओहिना अक्षुण्ण अछि ।

सलहेस : मैथिली लोकगाथामे 'सलहेस' महत्वपूर्ण लोकगाथा थिक । ई लोकगाथा दुसाध जातिक संगहि आनो वर्गमे लोकप्रिय अछि । ई दुसाध जातिक गाथा थिक । सलहेसक गाथा गाबयवलाक संख्या प्राय: सबसँ बेसी अछि । मौखिक परम्पराक तथा गायकक वैयक्तिक विभिन्नताक कारणेँ विभिन्न गाथाक पाठमे किछु-किछु अन्तर देखबामे अबैछ, मुदा मूल कथामे कोनो खास अन्तर नहि अछि । एकर नायक सलहेस नायकक सभ गुणसँ सम्पन्न छथि । दुसाधक गाम वा टोलमे सलहेसक गहबर थान रहैत अछि जतय सालमे कमसँ कम एक बेर हुनकर पूजा विधि-विधानसँ उत्साहपूर्वक होइत अछि । पूजाक सामग्री ओहि समाजक लोक गाममे घूमि कऽ सलहेसक गाथा गाबि कऽ प्राप्त करैत छथि । गामक सभ जातिक लोक उदारतापूर्वक सहयोग करैत छथिन । गहबरमे सलहेसक मूर्ति स्थापित कयल जाइछ । गामघरमे लोक हिनका राजाजी नामसँ सेहो सम्बोधित करैत अछि । सलहेस जंगल आ पहाड़सँ आच्छादित महिसौथाक प्रतापी राजा छलाह । दलित, पतित, दु:खित सभक कल्याण हेतु ओ सदैव तत्पर रहैत छलाह ।

गेय रूपमे राजा सलहेसक गाथाक एक रूप अछि जकरा श्रव्य काव्य कहि सकैत छी तँ लोकगाथाक दोसर स्वरूप छैक नाचक । सलहेसक ई नाच मिथिलामे विशेष लोकप्रिय रहल अछि । राजा सलहेसक नाचक लेल पाँच-सात व्यक्तिक प्रयोजन होइछ । महिसौथाक राजा सलहेस, हुनक छोट भाइ मोतीराम, समदिया हजाम, राजा सलहेसक ससुर, भगिन करिकन्हा, पत्नी सत्यवती, मालिन, पकड़िया राजाक राजा कुलहेसर, तकर बेटी चन्द्रावती आदि प्रमुख पात्रक भूमिका एकर नाट्य-रूपमे रहैत अछि । नाच सुमिरनसँ प्रारम्भ होइत अछि । सुमिरनक

किछु पाँती निम्नलिखित अछि:

सुमिरन सुमिरन सुमिरन करैछी
छप्पन कोटि देव के हृदयमे जपै छी ए ।
पूरब-पूरबे सुमिरनमा हे माता उगला सुरुज के ए
पश्चिम-पश्चिमे सुमिरनमा करैछी मीरा सुलताने ए
उत्तर-उत्तरे सुमिरनमा करैछी पाँचो पांडव भीम के ए
दक्षिण-दक्षिण सुमिरनमा करैछी गंगा हनुमान के ए ।

दीनाभद्री : दीनाभद्री लोकगाथा बिहार-नेपालक सीमान्त प्रान्तमे मुसहरक जातीय गाथा थिक । दीनाभद्री अपन समाजक देवताक रूपमे पूज्य छथि । हिनक गाथाकेँ सस्वर गाबिकऽ तथा नाचिकऽ लोक-नाट्यक रूपमे सेहो प्रस्तुत कयल जाइत रहल अछि । सामाजिक शोषण तथा अनाचारक विरुद्ध मुसहर जातिक ई दुनू भाई दीना आ भद्रीक शौर्य आ पराक्रमक यशोगान थिक । कहल जाइत अछि जे जोगिया गाममे दीना आ भद्री नामक दू भाइ रहैत छलाह । ओहिठामक तत्कालीन सामंत कनक सिंहक अत्याचार, शोषण, दुराचारसँ लोक त्रस्त छल । दुनू भाइ एहि शोषण आ अत्याचारक विरुद्ध ठाढ़ भेलाह आ हुनका परास्त कयलनि । लोक शोषणसँ मुक्ति पओलक । तहिएसँ हुनक शौर्यक लोक प्रचलित गीत लोकगाथाक रूपमे प्रसिद्ध भऽ गेल । दीनाभद्रीक गाथाक किछु पद द्रष्टव्य अछि

जाहि बोनऽ आहो भद्री सिकियो न डोलै हो राम ।
ताहि बोनमे नाऽ
भद्री खेलवै शिकार हो राम ।

बूढ़वो नहि मारै भद्री बचबो नहि मारै हो राम
बिछि-बिछि छैला जवाने हो राम,
हकन कनै छै भद्री बन के मयुरनी हो राम,
बारी बैसह नाऽऽ
भद्री हरलऽ सिन्दुरवा हो राम
जनि कानु जनि खिजु वन के मयुरनी गेनाऽऽ
जनि ढ़ारू नाऽऽ
मयुरनी नैना दुनू नोर ।
जबे तोरा आगे मयुरनी
मयुरऽ जिआय देबौ,
किए देवाऽ नाऽ,
मयुरनी हमसे इनामऽ गेऽ नाऽऽ
जब तोहे आहोइ भद्री मयुरऽ जिआय देऽ बऽ हो राम
भद्री हो भरि रातिऽ नाऽ,
भद्री हो नचबा देखायब भोर होते नाऽ,
बोली हम सुनाय देऽबऽ हो राम;

नैका बनिजारा : नैका बनिजारा मैथिलीक लोकप्रिय गाथा थिक । लोकगाथाक आधार पर 'मणिपद्म' द्वारा 1972 ई॰ मे लिखल 'नैका बनिजारा' उपन्यास लोक गाथाक खोजक अजस्र संभावना उपस्थित करैत अछि । नैका बनिजारा गाथा उत्तरी मिथिलामे विशेष प्रचलित अछि । एहि गाथामे गाथाक

नायक नैकाक पत्नी फुलेश्वरी, बहिन तिलकेश्वरी आ तिलंगा नामक दिव्य बाछाक वर्णन मुख्य रूपसँ भेल अछि । नैका अपन पत्नीकेँ घरमे छोड़ि व्यापार करबाक उद्देश्यसँ बाहर जाइत छथि । हुनक अनुपस्थितिमे बहिन तिलकेश्वरी अपन भाउज फुलेश्वरीकेँ प्रताड़ित करैत अछि आ कुंभा डोमक हाथमे दऽ दैत अछि जतय फुलेश्वरी नगरक रानीक संरक्षण पाबि सतीत्वक रक्षा कयलनि । व्यापारसँ वापस भेला पर अपन बहिन तिलकेश्वरी द्वारा पत्नीकेँ देल गेल प्रताड़नासँ अवगत भेलाह । गामक पंचकेँ बजओलनि आ पंच लोकनि तिलकेश्वरीकेँ अपराधक सजा शूली देबाक निर्णय लेलनि । मुदा फुलेश्वरी अपन ननदिकेँ क्षमा कऽ शूली चढ़बासँ बचा लेलकनि ।

गाथामे फुलेश्वरीक विरह, त्याग ओ क्षमाशीलताक मार्मिक चित्रण भेल अछि । एवं प्रकारेँ नैका बनिजाराक गाथामे नैका आ सती साध्वी नारी फुलेश्वरीक जीवन-संघर्षक कथा मिथिलाक सामाजिक जीवनक अयना बनि गेल आ कथा गाथाक रूपमे प्रचलित भऽ गेल । नैका बनिजाराक किछु पाँती निम्नवत अछि ।

रम्भा रौ, देह काँपइ पिपरक पात जकाँ ना
रम्भा रौ, मोन काँपइ पुरबा बसात जकाँ ना
लाल पलंग नैका बैसल रहय ना
धनि काँपइ माघ मासक प्रात जकाँ ना ।

लवहरि-कुशहरि : ई मकरन्दा-मलारी लोकगाथाक आधार पर मुख्यतः केन्द्रित अछि । ई मुख्यतः रामकथा थिक, किन्तु ई रामकथा साधारण रामकथासँ भिन्न अछि । एहिमे रामक प्रधानता नहि, सीताक चारित्रिक विशेषता देखाओल गेल अछि ।

'मकरन्दा मलारी'क आधार पर 'मणिपद्म' 'लवहरि-कुशहरि' उपन्यास

सृजित कयल । ई तीन खण्डमे अछि-अयोध्या खण्ड, वन खण्ड आ कमला खण्ड । एहिमे रावणक बध, रावणक चित्र देखि रामक रोष, लव-कुशक जन्म ओ शिक्षा-दीक्षा आ दूनू भाइक हाथे रामक पराजय, हनुमानक बन्दी, सीताक पाताल-प्रवेश आदि अछि । मिथिलाक आचार-विचार, रहन-सहन, सभ्यता-संस्कृति आ लोक-व्यवहार आदि एहि गाथामे परिलक्षित भेल अछि ।

लवहरि कुशहरि गाथा मलाह समाजमे बेशी प्रचलित अछि । लवहरि कुशहरिक गायक एकर गान सुमिरनसँ प्रारम्भ करैत छथि । लवहरि कुशहरिक गाथाक किछु पाँती निम्नवत अछि:

कलजोरि परिनाम करै छी मैया जानकी आब यौ ।
बैठहला जे दादा जे ने रामचन्द्र भगवान यौ ।
आसन लागि के बैठेयं गादीपर ने आब यौ ।
गादी पर जे बैठल दादा सिरी नारायन आब यौ ।
नरसिंह नायक महिमा डोलै नारदजीके आब यौ ।
गुरु वशिष्ठ मुनि के आसन डोलि गेल आब यौ ।

राय रणपाल : मिथिलाक ई प्रसिद्ध लोकगाथा थिक । एहि प्रसिद्ध लोकगाथाक आधार पर 1976 ई॰मे 'मणिपद्म' द्वारा 'राय रणपाल' उपन्यास प्रकाशित भेल । एकर मुख्य नायक राय रणपाल योद्धा रहथि । ओ इनरदीन, अरिन्दम सेहो कहाबथि । हिनक गाथा पमरिया सभ गबैत अछि । पमरियाक मेर जाहिमे तीन गोटे राजपूती भेषमे रहैत छथि नाचि-गाबिकेँ एहि गाथाकेँ प्रस्तुत करैत छथि । तेसर पमरिया मात्र भले जी भले, भले जी भले गबैत छैक । एहि गाथाक किछु पाँती निम्नलिखित अछि :

ओ हे राम जी के ओ रे ना ।
मामा लैह आब राम जी के नामे जी ।
मामा जेबैह तो यमपुर धामे जी ।
मामा फेकह साज सिंगारे जी ।
मामा देखह हमर तलवारे जी ।
मामा नोचतउ तोरा चिल्ह-सियारे जी ।
तो पापी धरतीक भारे जी ।
तोरा माथा पर नाचउ काले जी ।।
मामा हम छी गुगली रणपाले जी ।
हमर बाप इनरदौन रणपाले जी ।
मामा मसुमति रणमे कराले जी ।

दुलरा-दयाल : दुलरा दयाल मलाह जातिक गाथा थिक । ई मिथिलाक लोकप्रिय गाथा मानल जाइत अछि । एहि अमर गाथा पर आधरित 1984 ई॰मे मणिपद्म क 'दुलरा दयाल' उपन्यास प्रकाशित भेल । हुनका अनुसार ई उपन्यास कामरूप बंगाल आ मिथिलाक डाइन तन्त्र पर आधारित खोजपूर्ण उपन्यास कहल गेल अछि, मुदा ई मूलत: लोकगाथा पर आधारित अछि । तन्त्र पर आधारित ई गाथा युद्ध आ रोमांससँ मुक्त अछि । गाथाक नायक दुलरा दयाल जल देवी कमलाक अनन्य उपासक तांत्रिक नर्त्तक आ महान अभियानी छलाह ।

कारिख पजियार : मैथिली लोकगाथामे कारिख पजियारक प्रमुख स्थान अछि । कारिख गाथा मध्य कारिख पजियार सूर्य अथवा दीनानाथक असीम कृपासँ अवतरित भेल छथि । कारिख सम्पूर्ण मानव कल्याणक लेल आयल छथि,

किन्तु किछु जाति विशेषमे संकुचित भऽ कऽ रहि गेल छथि। एखनो देखल जाइत अछि जे हिनक पूजा सवर्णो लोकनि घरक गोसाँइक रूपमे करैत छथि। मल्लाह, सूड़ी, हलुआई, यादव, दुसाध जातिमे तँ प्रायः हिनक पूजा होइते अछि। मिथिलामे अति प्राचीन कालसँ कतहु गृह देवता, कतहु ग्राम देवता, तँ कतहुँ गहबरक रूपमे कारिख पजियारक पीड़ी स्थापित अछि। एहि गहबर ओ गृह देवताक समक्ष हिनक गाथा गायन भगति गीतक रूपमे ओ पूजा विधानक रूपमे कयल जाइत अछि। सालमे एक बेर पूजा बड़ धूम धामसँ मनाओल जाइत अछि।

कारिख गाथा मुख्यतः संगीतात्मक राग पर आधारित अछि। गाथाक वाचन ओ गायन एक निश्चित राग-ताल-लय केर अन्तर्गत भाव-विह्वल भऽ होइत अछि। मृदंग, झालि, करत्तार संगीतात्मक भाव केर मर्यादा बढ़बैत अछि। गाथा सुमिरणसँ प्रारम्भ होइत अछि। द्रष्टव्य अछि सुमिरनक ई पद :

प्रथम वंदगी करै छी नारायण हौ
निर्गुण दीनानाथ के हौऽऽ
दोसर वंदगी करै छी गुरु आऽ बऽ हेऽ।
ओह्य गुरु देलकै नारायण हौऽऽ
अकिल गियनमा हौ
हुनका आइ चरण मे बंदगी आऽ बऽ हेऽ।
तेसर वंदगी करै छी नारायण हौऽऽ
नग्र डिहबार के हौऽऽ
साखी रहिहऽ नगर हौ डिहबार
अबला जे बनिकेऽ राजा जी

एलियै शरणमे हौऽऽ

साखी रहिहऽ शरणमा के आऽऽ वऽ हेऽ

चारिम वंदगी करै छी नारायण हौ

गोरिल नंद लाल के हौऽऽ

साखी रहिहऽ गोरिल नंद लाऽऽ लऽ हेऽ ।

पाँचम वंदगी करै छी नारायण हौ

सकल समाज के हौऽऽ

वंदगी करै छी नारायण सकल समाज हेऽऽ ।

कारिख गाथा चारि खण्डमे विभाजित अछि : ज्योति प्रसंग, कारिख प्रसंग, कारिख विआह प्रसंग आ विदाइ प्रसंग ।

संक्षेपमे कहि सकैत छी जे मिथिलाक समृद्ध लोकगाथा-परम्परामे कारिख पजियार चर्चित रहितहुँ जनसामान्यक लेल अज्ञाते जकाँ बुझि पड़ैत अछि ।

उपर्युक्त गाथाक अतिरिक्त मलाह जातिक लोकगाथामे कमला-कोइला, अमर सिंह, केवल सिंह, जय सिंह, गांगो देवीक स्थान महत्त्वपूर्ण अछि । गरीबन भुइयां, धोबी जातिक लोकगाथा थिक । साओन मासमे हिनक विशेष पूजा कयल जाइत अछि । गणिनाथ गोविन्द मिथिलाक तेली, सूड़ी, कलवार एवं हलुआई जातिक गाथा थिक । कानू आ हलुआई जातिमे फेकुराम, दयाराम आ मनसाराम गणिनाथ गोविन्दक समकक्ष बुझल जाइत अछि । सती बिहुला गाथामे सर्पपूजाक महत्त्व अछि । नागपंचमी दिन नागदेवताक पूजा घर-घरमे होइत अछि । श्याम सिंह आ बालाजीक लोकगाथा डोम जातिक धरोहर थिक । मिथिलाक यादव जातिक लोकगाथामे भुइयाँ बख्तर आ कारू खिरहरिक गाथाक सेहो महत्त्वपूर्ण स्थान अछि ।

एहि तरहेँ देखबामे अबैत अछि जे मैथिली लोकगाथामे वर्णित नायक मिथिलाक जनजीवनमे लोकपूजित, लोकरक्षक, लोककल्याणकारी, लोकउद्धारक रूपमे प्रतिष्ठित छथि । एकर अतिरिक्तो कतेक गाथा मिथिलामे छिड़िआयल अछि ।

◆◆◆

प्रश्न ओ अभ्यास

1. लोकगाथाक सामान्य अर्थ की होइछ ?
2. मिथिलामे प्रचलित विभिन्न लोकगाथाक नामक उल्लेख करू ?
3. कोन-कोन गाथामे नायककेँ देवत्व प्राप्त भऽ सकल अछि ?
4. कोन-कोन गाथा सुमिरनसँ प्रारम्भ होइत अछि ?
5. सलहेसक पूजा स्थलकेँ की कहल जाइत अछि ?
6. सलहेस कोन ठामक राजा छलाह ?
7. सलहेसक नाचक लेल कतेक व्यक्तिक प्रयोजन होइछ ?
8. लोरिकगाथाक वर्ण्य विषय की थिक ?
9. लोकगाथाक पर आधारित कोन-कोन उपन्यास मणिपद्मक द्वारा लिखल गेल अछि ?
10. कारिख पजियारक गाथा कतेक खण्डमे विभक्त अछि ?
11. कामरूप बंगाल, आ मिथिलाक डाइन तन्त्र पर आधरित कोन गाथा अछि ?
12. लोरिक गाथामे राजा हरबाक प्राण हरक क्षणक वर्णन करू ?

◆◆◆